

3.2.24

पञ्चा. आप-वाङ्मयी गण के प्राथमिकता के वादी  
वाङ्मयी गण के प्राथमिकता मय-अभिव्यक्ति के  
लाभ के मित्र के रूप में हम एक कारण के  
मध्य वाली नाम ले-कुमा ही अब यह वाद  
पञ्चा के-चलाग नही-चाहते ही ऐसे वही पर  
पर स्वार्थि रूप में जाते

श्री श्री देवी

नीर देवी

हमने वाङ्मयी गण के अने अभिव्यक्ति को  
कुमा गणों वाङ्मयी गण वाद पञ्चा के भाग चलाग  
नही-चाहते ही वाली नाम ले-कुमा ही अब।  
वाद वाङ्मयी गण वाली पर प ( विद्रो रूप में जाते )  
वाङ्मयी गण के पहचान- निरानामय रूप में अब  
रूप में पञ्चा. को ही के अने अने नये नये  
अने की नाम के कारण पर ही है

श्री  
अशुभ